Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

भारतीय समाज और बैल

चंद्राक साहू*

* एम.ए., नेट (इतिहास) जी, 465-66 आजाद नगर, भीलवाड़ा (राज.) भारत

प्रस्तावना – आदिमकाल से पशुओं का हमारे समाज में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मनुष्य प्रारंभ में अपने जीवन का निर्वाह प्राकृतिक वस्तुओं का संग्रहण करके एवं पशुओं का शिकार करके करता था। भारतीय इतिहास के संदर्भ में सर्वप्रथम पशुपालन के साक्ष्य मध्य पाषाण काल से मिलते हैं। नव पाषाण काल में मनुष्य नदियों के किनारे बसने लगा और कृषि कार्य करने लगा तथा यायावर जीवन का त्यागकर स्थाई बस्तियों का निर्माण कर रहने लगा। हिंदू धर्म के धार्मिक ग्रन्थों में भी पशुओं का विस्तार से वर्णन मिलता है। पशुओं के बिना देवताओं, असुरों, मानवों और ऋषियो की कल्पना अधूरी है। पुराणों के अनुसार सभी जानवरों के पिता ब्रह्मा के पुत्र कश्यप थे। कश्यप के अनेक पत्नियां थीं जो विभिन्न प्रकार के पशुओं की माताऐ थी। भारतीय संस्कृति में पशुओं को काफी महत्व दिया गया है इनको किसी ने किसी देवता से जोड़ा गया है। मसलन बैल को शिव से, घोड़े को सूर्य से, भैंसे को यमराज से तथा और भी अनेक देवताओं को पशु पक्षियों से जोड़ा गया है। इन पशुओं का ईश्वर के साथ समीकरण करने से समाज में इनको समान की दृष्टि से देखा जाने लगा और उनकी पूजा की जाने लगी।

बैल को शिव का वाहन होने के कारण पवित्र पशु माना जाता है। शिव और पार्वती को संयुक्त रूप से बैल पर बैठे हुए दिखाया गया है। ऋग्वेद में बैल का उल्लेख मिलता है। भारत के साथ साथ विश्व के अन्य देशों में भी बैल की पूजा की जाती थी। मसलन मेसोपोटामिया के निवासी औरोकस के रूप में बैल की पूजा करते थे। बैल बेबोलीन देवता एन सीन और मदुर्क का चिन्ह माना जाता है। प्राचीन मिस्रवासी बैल को एपिश नाम से पूजते थे। इस प्रकार बैल की पूजा न केवल भारत में बल्कि विश्व के अनेक देशों में की जाती थी।

भारतीय इतिहास के संदर्भ में बैल का प्राचीनतम साक्ष्य सिंधु घाटी सभ्यता से मिलता है स सिंधु घाटी सभ्यता की मुहरों पर सर्वाधिक अंकन बैल का मिलता है, कई मुहरों पर एकश्रंग बैल का अंकन मिलता जिसके सामने संभवत धुपदंड रखा है। एकर्शग बैल की मूर्तियां भी बहुत मिली सामान्य बैल का चित्रण एवं उसकी मूर्तियां भी प्रमुखता से मिलती है जिसका कारण संभवत धार्मिक रहा होगा। ऐतिहासिक काल में हम शिव और नंदी का घनिष्ठ संबंध देखते हैं। सिंधु घाटी सभ्यता के लोग विभिन्न प्रकार की धार्मिक मान्यताओं में विश्वास करते थे। ये पशु, वृक्ष, जल, नाग इत्यादि की पूजा करते थे। इसके अलावा उत्खनन में प्राप्त साक्ष्यों से अनुमान लगाया गया है की ये लोग पशु बलि भी देते थे। प्रख्यात इतिहासकार के. सी.श्रीवास्तव के अनुसार लोथल में एक चबूतरे पर ईट की बनी वेदी मिली साथ ही पशुओं की जली हड्डियां भी। इनमे से कुछ हड्डियां बैल की भी थी। संभवत सिंधु घाटी सभ्यता में बैल की बलि भी दी जाती थीं।

सिंधु घाटी सभ्यता एक नगरीय सभ्यता थी। यहां पर व्यापार वाणिज्य काफी उन्नत अवस्था में था। उत्खनन में मिली मुहरों से जानकारी मिलती हैं की सिंधु घाटी सभ्यता के लोगो के विदेशियों से व्यापारिक संबन्ध थे। यहां के लोग देसी और विदेशी दोनों प्रकार के व्यापार करते थे। यहां के लोग स्थल और जल दोनों मार्गो से व्यापार करते थे। स्थल मार्ग के व्यापार में बेलगाड़ियो का प्रयोग किया जाता था। अत: बैल का यातायात के साधन के रूप में भी उपयोग किया जाता था।

सिंधु घाटी सभ्यता अपने व्यापार वाणिज्य के लिए पूरे विश्व में विख्यात थी। किंतु इस सभ्यता की आय का मुख्य स्त्रोत कृषि था। सिंधु घाटी सभ्यता से उत्खनन में बनावली से मिट्टी का हल का प्रतिरूप और कालीबंगा से जूते हुए खेतों के साक्ष्य मिले हैं। अत: इन खेतों की जुताई बेलों से की जाती थी। इस प्रकार सिंधु घाटी सभ्यता में बेलों का प्रयोग विभिन्न प्रकार के कार्यों में किया जाता था।

वैदिक कालीन संस्कृति ग्रामीण संस्कृति थी। वैदिक काल में पशुओं का महत्व और भी अधिक हो गया। वैदिक कालीन समाज में पशु व्यक्ति की समृद्धि का मुख्य आधार माने जाते थे। वैदिक काल में पशुओं के लिए लड़ी गई अनेक लड़ाईयां का उल्लेख मिलता है। उत्तरवेदिक काल में धार्मिक कर्मकांडो में भारी बढ़ोतरी हुई जिसके कारण पशुओं की भारी संख्या में बलि दी जाने लगी। उत्तरवेदिक काल में आर्यों के व्यवसाय में परिवर्तन हुआ अब आर्य एक निश्चित स्थान पर बस्ती बसाकर रहने लगे और कृषि करके अपना जीवन यापन करने लगे। उत्तरवेदिक कालीन ग्रन्थ शतपथ ब्राह्मण में कृषि की चारों क्रियाओ के बारे में जानकारी मिलती हैं। खेत हल द्वारा जोते जाते थे, काठक संहिता में 24 बैलो द्वारा खींचे जाने वाले हल का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार कृषि पर निर्भर समाज होने के कारण समाज में बैल का महत्व और बढ़ गया।

वैदिक काल में आर्यों ने देवताओं का प्रकृतिकरण किया था। वह प्रकृति के रूप में उनकी पूजा करते थे। प्रकृति के अलावा आर्य कभी कभी देवताओं की कल्पना पशु के रूप में भी करते थे। मसलन, इंद्र या घोष को बैल और सूर्य को अश्व के रूप में कल्पित किया गया। इंद्र ऋग्वेद का सबसे प्रमुख देवता था। इंद्र की बैल के रूप में कल्पना करना वैदिक काल में बैल की महत्ता को दर्शाता है।

महाकाव्य काल में भी कृषि पशुपालन और पशुपालन जीवन यापन के मुख्य स्त्रोत थे। भूमि की जुताई बेलों द्वारा की जाती थी। राजा जनक को रामायण में हल चलाते हुए दिखाया गया था। इसी तरह युधिष्ठिर को भी महाभारत में हल चलाते हुए दिखाया गया। अत: ग्रामीण संस्कृति में जीविका

का एकमात्र साधन कृषि था। बेलों के बिना कृषि कार्य आसान नहीं था।

छठी शताब्दी ई. पू.में उत्तरवेदिक कालीन धार्मिक कर्मकांडो और अंधविश्वासों के विरोध में भारत में धार्मिक सुधार आंदोलन हुए इनमे जैन धर्म और बौद्ध धर्म प्रमुख थे। इन्होंने तत्कालीन समाज में यज्ञों में दी जाने वाली पशु बलि का भयंकर विरोध किया और ब्राह्मणों की सत्ता को चुनौती दी। ये वेदों में विश्वास नहीं करते थे। जैन धर्म में 24 तीर्थकर प्रमुख माने जाते हैं। इनमें प्रथम ऋषदेव थे। ऋग्वेद में ऋषदेव का उल्लेख मिलता है। हिंदू देवता शिव के समान ऋषदेव का प्रतीक भी बैल था। दोनों को ही नाथो का नाथ आदिनाथ कहा जाता है। शिव महापुराण में उन्हें 28 योगावतारो में भी गिना जाता है। जिस प्रकार हिंदू धर्म में शिव को एक महत्वपूर्ण देवता माना जाता है उसी प्रकार जैन धर्म में ऋषभदेव का महत्व है। इस प्रकार हिंदू धर्म की तरह जैन धर्म में भी बैल को महत्व दिया गया है। मगध साम्राज्य की स्थापना छठी शताब्दी ई. पू.में हुई थी। कालांतर में मगध एक शक्तिशाली महाजनपद बन गया था। चौथी शताब्दी ई. पू. में चंद्रगुप्त मौर्य ने मगध पर अधिकार कर लिया था। चंद्रगुप्त के बाद मौर्य वंश में अशोक महान सम्राट हुआ। अशोक ने बौद्ध धर्म सरंक्षण दिया था। मोर्यो ने बैल की उपासना की ऐसी कोई जानकारी नहीं मिलती हैं किंतु अशोक ने सात स्तंभों का निर्माण करवाया था। इन स्तंभों पर विभिन्न प्रकार की पशुओं की आकृतियां बनाई गई हैं। स्तंभों में सारनाथ के स्तंभ पर गज, अश्व, बैल, सिंह की आकृतियां का अंकन है। ये चारो पशु किसी ने किसी देवता के वाहन माने जाते हैं। फूसे की मान्यता है कि, ये पशु बुद्ध के जीवन की चार महान घटनाओं का प्रतिनिधित्व करते है। मसलन हाथी गर्भावस्था, बैल जन्म, अश्व गृहत्याग, सिंह बुद्ध का प्रतीक है। अशोक के चंपारण से प्राप्त रामपुरवा के स्तंभ पर बैल का अंकन किया गया है। मौर्य स्तंभ कला का यह सबसे अच्छा उदाहरण माना जाता है। इसका निर्माण बलुआ पत्थर से किया गया था। रामपुरवा बैल अपने कोमल मांस, संवेदनशीलता नासिका, सतर्क कान और मजबूत पैरो के बेहतर प्रतिनिधित्व का प्रर्दशन करते हुए नाजुक रूप से गढ़ी गई माडल के लिए विख्यात है। यह भारतीय और फारसी तत्वों का मिश्रण हैं। जबकि आधार पर आभूषण भारतीय विशेषताए नही है।

मोर्यो के बाद कुषाण वंश ने भारत के एक बड़े क्षेत्र पर शासन किया था। भारत में कुषाण साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक विम कडफिस था। विम ने महेश्वर की उपाधि धारण की थी। इस से ज्ञात होता है कि वह शिव का उपासक था। उसने अपने सिक्कों पर शिव, नंदी त्रिशूल की आकृतियां उत्कीर्ण करवाई थी। अत: भारतीयों के समान जिन भी लोगों ने शिव में आस्था व्यक्त की उन सभी लोगों ने शिव के साथ साथ बैल को भी महत्व दिया। गुप्त वंश के शासकों ने वैष्णव धर्म को आश्रय प्रदान किया था।किंतु गुप्तकाल में शैव धर्म भी प्रचलित था। गुप्तकाल में अनेक शिव मंदिरों का निर्माण किया गया था। गुप्तकाल के अनेक ग्रंथो से शिव के बारे में जानकारी मिलती है। मसलन भारवी के किराताजुनिर्य,कालीदास के कुमारसम्भव, वायु पुराण, विष्णु पुराण में शिव का उल्लेख किया गया है। गुप्तकाल में शैव धर्म के प्रभाव के स्कन्दगुप्त ने बैल प्रकार के सिक्के चलवाए थे। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता जिन शासकों ने शैव धर्म को महत्व दिया और शिव की उपासना करते थे उन सभी ने शिव के वाहन नंदी को किसी ने किसी रूप में महत्व दिया है।

हर्ष के काल में सभी घरों में शिव की पूजा होती थी। हर्ष भास्कर वर्मा,शंशाक सभी शैव थे। पल्लव वंश के काल में आलवारो ओर नयनारो के नेतृत्व में भक्ति आंदोलन की शुरूवात हुई नायनारो ने शिव को अपना आराध्य देव माना था।

शैव धर्म संबंधित मुख्य 4 संप्रदाय प्रमुख माने जाते हैं– 1 पाशूपत 2 कालामुख 3 कापालिक 4 लिंगायत। लिंगायत संप्रदाय के संस्थापक बसव को माना जाता है ये लिंग तथा नंदी दोनों की पूजा करते थे। बसव को नंदी का अवतार माना गया हैं। संभवत लिंगायतो ने बसव का शिव से संबंध जोड़ने के लिए उसे नंदी का अवतार माना है।

भारतीय संस्कृति में विभिन्न देवी देवताओ के साथ उनके वाहन के रूप में विभिन्न पशुओं का भी उल्लेख किया गया है और इनके साथ ही उनके पशु वाहनों की मूर्तियां भी मिलती हैं। मसलन सिंह, बैल, गरूड़,हंस मूषक की मूर्तियां शिव,पार्वती, गणेश, कार्तिकेय, विष्णु, ब्रह्मा तथा गणेश की मूर्तियां के साथ साथ पाई जाती हैं। बैल हिंदू पौराणिक कथाओं में एक महत्वपूर्ण पशु है जो शिव से जुड़ा हुआ है। शिव को बैल की सवारी करते हुए दिखाया गया हैं जो उनकी शक्ति का प्रतीक है। बैल को पार्वती से भी जोड़ा गया है जिन्हे एक बैल पर खड़े दिखाया गया हैं। भारत में जहा जहा शिव मंदिरों का निर्माण किया गया वहा पर शिव के साथ नंदी की मूर्ति भी स्थापित की गई। हिंदू कला और वास्तुकला में बैल को उर्वरता के प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया है।भारत में सबसे विशाल नंदी की मूर्ति लेपाक्षी मंदिर में मिलती हैं। यह मंदिर आंध्र प्रदेश के अन्तपुर जिले में लेपाक्षी गांव में है। इसके बारे में मान्यता है कि इस मंदिर के एक शिव लिंग का निर्माण ऋषि अगस्तय ने करवाया था। रामायण काल में श्री राम ने जटायू का अंतिम संस्कार के बाद दूसरा शिव लिंग यह स्थापित किया। इस मंदिर के सामने एक विशाल नंदी की मूर्ति चटान को कटकर बनाई गई थी।

जुराहो के विश्वनाथ मंदिर में मूर्तिकला के उत्कृष्ठ उदाहरण देखने को मिलते है। मंदिर के बाहर था अंदर बहुसंख्यक मूर्तियां हैं। मंदिर के मुख्य द्वार के सामने एक छोटा मंदिर है जिसमे विशाल नंदी की मूर्ति स्थापित की गई है। इसी तरह पल्लव काल में बने रथ मंदिरों के सामने भी नंदी महाराज की मूर्तियां स्थापित की गई है। इस तरह भारत में जितने भी शिव मंदिर बनाएं गए उनमें नंदी की प्रतिमा भी स्थापित की गई है। भारत में जहां जहा शिव की पूजा की जाती वहा नंदी को भी पूजा जाता है। बैल नवरात्रि से त्योहार से भी जुड़ा हुआ,जिसके दौरान शिव और दुर्गा के भक्त बैल से संबंधित अनुष्ठान करते थे।

भारत में बेलों से संबंधित अनेक त्योहार मनाए जाते हैं। राजस्थान, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ इत्यादि राज्यों में बेलों से संबंधित अनेक त्योहार मनाएं जाते है। महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ इत्यादि में बेलपोला का त्योहार मनाया जाता है। इसे मोठा पोला और तन्हा पोला के नाम से भी जाना जाता है। यह पर्व हर साल भाद्रपद की अमावस्या को मनाया जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार जब विष्णु ने जन्म अष्टमी के दिन कृष्ण के रूप में जन्म लिया था तब राजा कंस ने कान्हा को मारने के लिए अनेक राक्षसो को भेजा था। इन राक्षसो में एक पोलासुर था। कृष्ण ने पोलाशुर का वध कर दिया था।भाद्रपद अमावस्या को इसका वध करने के कारण इस दिन को पोला कहा जाने लगा।

जल्लीकट्टू तमिल नाडु के ग्रामीण इलाकों का एक परंपरागत खेल है जो पोंगल त्यौहार पर आयोजित कराया जाता है और जिसमे बैलों से इंसानों की लड़ाई कराई जाती है। जल्लीकट्टू को तमिलनाडु के गौरव तथा संस्कृति का प्रतीक कहा जाता है। ये 2000 साल पुराना खेल है जो उनकी संस्कृति

से जुड़ा है।

जल्लीकट्टू के बारे में कहा जाता है की प्राचीन काल में महिलाएं अपने पति का चुनाव करने के लिए इस खेल का आयोजन करती थी। यह खेल योद्धाओ के बीच काफी लोकप्रिय था। जो बेलों को काबू में कर लेता महिलाएं उनको अपना पति चुन लेती थी।

राजस्थान में दीपावली के अगले दिन गोवर्धन पूजा की जाती है। गोवर्धन पूजा के दिन बेलों की पूजा की जाती है।ग्रामीण क्षेत्रों अनकूट महोत्सव मनाया जाता है।इस दिन नए अनाज की शुरूवात ईश्वर को भोग लगाकर की जाती है।

इस प्रकार भारतीय संस्कृति में बेलों को महत्व दिया गया और उन्हें समान की दृष्टि से देखा गया और शिव के साथ साथ समाज में बैल को भी पूजा जाता है। इस प्रकार पशु हमारे जीवन के महत्वपूर्ण अंग बन गए हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. पट्टनायक, देवदत्त: पशु. दिल्ली: राजपाल एंड संस(2015)
2. श्रीवास्तव, कृष्ण चंद्र: प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति, इलाहाबाद: यूनाइटेड बुक डिपो(2018)
3. शर्मा, कृष्णगोपाल , जैन, हुकम चंद , शर्मा, मुरारीलाल: भारत का इतिहास, जयपुर: अजमेरा बुक कंपनी(2016)
4. थापर, रोमिला: भारत का इतिहास, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन (2018)
5. शर्मा, कालुराम – व्यास, प्रकाश: भारतीय संस्कृति के मूल आधार, जयपुर: पंचशील प्रकाशन(2012)
6. हमारे अतीत, एनसीईआरटी

****